AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

भारत–अमेरिका संबंधों में सॉफ्ट पावर एवं प्रवासी कूटनीति: सांस्कृतिक आधार, राजनीतिक महत्व और रणनीतिक प्रासंगिकता

ORIGINAL ARTICLE

Authors
विजय दीक्षित
शोधार्थी

प्रो. अजय कुमार उपाध्याय
प्रोफेसर
राजनीति विज्ञान विभाग
शंभू दयाल पी जी कॉलेज
गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

शोध सार

सॉफ्ट पावर आज की अंतरराष्ट्रीय राजनीति में उन सबसे महत्त्वपूर्ण अवधारणाओं में से एक बन चुकी है, जो देशों के बीच विश्वास, स्वीकार्यता और दीर्घकालिक साझेदारी को आकार देती है। वैश्विक परस्पर निर्भरता, सांस्कृतिक आदान–प्रदान, वैज्ञानिक नवाचार और प्रवासी समुदायों की बढ़ती सक्रियता ने यह स्पष्ट किया है कि किसी राष्ट्र की वास्तविक प्रभावशीलता उसकी भौतिक क्षमता से अधिक उसके नैतिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक आकर्षण पर आधारित होती है। इसी संदर्भ में भारत–अमेरिका संबंध एक उल्लेखनीय उदाहरण प्रस्तुत करते हैं, जहाँ सॉफ्ट पावर ने द्विपक्षीय सहयोग को अधिक गहरी सामाजिक और वैचारिक आधार प्रदान किया है। भारत की सांस्कृतिक परंपराएँ, लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति उसकी स्थायी प्रतिबद्धता, ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में उसकी प्रतिष्ठा और व्यापक भारतीय प्रवासी समुदाय की उपलब्धियों ने अमेरिका में भारत की एक सकारात्मक, विश्वसनीय और प्रभावशाली छवि निर्मित की है। इन तत्वों ने दोनों देशों के बीच ऐसी पारस्परिकता विकसित की है, जो केवल सामरिक या आर्थिक हितों पर आधारित संबंधों से कहीं अधिक स्थिर और मूल्य–आधारित है। इसी कारण, समकालीन भारत–अमेरिका संबंधों की प्रमुख शक्ति सॉफ्ट पावर ही है, जिसने इस साझेदारी को बदलते वैश्विक संदर्भ में एक विशिष्ट और निरंतर विकसित होने वाली दिशा प्रदान की है। यह तथ्य विशेष रूप से 2023–2025 की अवधि में स्पष्ट दिखाई देता है, जब वैश्विक परिदृश्य चीन–अमेरिका प्रतिस्पर्धा, ट्रम्प 2.0 प्रशासन की संरक्षणवादी नीतियों, आपूर्ति–श्रृंखला संकट, डिजिटल प्रभुत्व की होड़ और भू–राजनीतिक अशांति से भरा हुआ था। अनेक राष्ट्रों की साझेदारियों में तनाव देखा गया, परंतु भारत–अमेरिका संबंध अपेक्षाकृत स्थिर रहे। यह स्थिरता केवल रणनीतिक अनिवार्यता से नहीं आई, बल्कि उन गहराई से निहित सांस्कृतिक, सामाजिक और बौद्धिक संबंधों से उत्पन्न हुई जिनकी जड़ें भारत की सभ्यतागत परंपरा और अमेरिका की लोकतांत्रिक पहचान में मिलती हैं। सॉफ्ट पावर इन संबंधों के लिए "सामरिक गोंद" का कार्य करती है ऐसा गोंद जो आर्थिक मतभेदों, शुल्क–विवादों, विदेश–नीति के उतार–चढ़ाव और नेतृत्व परिवर्तन के बीच भी संबंधों को टूटने नहीं देता। यह शोध–पत्र इसी बहुआयामी संरचना का विश्लेषण करता है कि क्यों और कैसे सॉफ्ट पावर भारत–अमेरिका संबंधों में निर्णायक शक्ति के रूप में उभरी है।

मुख्य शब्द

सॉफ्ट पावर, प्रवासी कूटनीति, सांस्कृतिक प्रभाव, डिजिटल नवाचार, रणनीतिक साझेदारी, इंडो–पैसिफिक.

परिचय

भारत–अमेरिका संबंधों का इतिहास जटिलताओं, उतारदृचढ़ावों और वैचारिक टकरावों से भरा रहा है। शीतयुद्ध काल में भारत की गुटनिरपेक्षता और अमेरिका का द्विध्रुवीय विश्व के प्रति प्रतिबद्ध राजनीतिक रुख अक्सर दोनों देशों को दूर ले जाता था। अमेरिका का पाकिस्तान के समर्थन की ओर झुकाव, भारत का सोवियत संघ से निकट संबंध, और दोनों देशों के बीच सुरक्षा–संदेह इन सभी कारणों से संबंध लंबी अवधि तक सीमित बने रहे लेकिन 1991 के आर्थिक उदारीकरण, उद्यमिता के उभार, सूचना प्रौद्योगिकी क्रांति, और वैश्विक स्तर पर भारतीय प्रवासी समुदाय की असाधारण सफलता ने इन संबंधों की दिशा बदल दी। भारत और अमेरिका के बीच यह परिवर्तन केवल राज्य–स्तरीय कूटनीति का परिणाम नहीं था, बल्कि समाजों की आंतरिक प्रक्रियाओं का फल था। अमेरिकी विश्वविद्यालयों, वैज्ञानिक संस्थानों, शोध प्रयोगशालाओं और तकनीकी उद्योगों में भारतीय मूल के छात्रों और पेशेवरों की बढ़ती उपस्थिति ने दोनों देशों के बीच विश्वास का नया ताना–बाना बुना। सैमुअल हंटिंगटन ने जिस "सांस्कृतिक सामंजस्य" को राजनीतिक स्थिरता का आधार बताया था, वह भारत–अमेरिका संबंधों में वास्तविक रूप से दिखाई देता है। दोनों देश लोकतंत्र, बहुलतावाद, खुली अर्थव्यवस्था, नवाचार, मानवाधिकार और वैज्ञानिक अनुसंधान के प्रति प्रतिबद्ध हैं। यह साझा वैचारिक भूमि सॉफ्ट पावर की नींव बन गई। 2023–2025 की अवधि में यह साझेदारी और तेज़ी से विकसित हुई। ट्रम्प 2.0 प्रशासन की आर्थिक राष्ट्रवाद–आधारित नीति, भारत पर बढ़ाए गए शुल्क, वीज़ा प्रतिबंध, आपूर्ति श्रृंखला के पुनर्गठन, और तकनीकी नियंत्रक नीतियों ने जहाँ कई देशों के लिए चुनौतियाँ पैदा कीं, वहीं भारत–अमेरिका संबंधों को बड़े स्तर पर प्रभावित नहीं किया। इसका कारण यह है कि इस साझेदारी का आधार केवल व्यापारिक हित या सामरिक संतुलन नहीं था, बल्कि वह सांस्कृतिक और राजनीतिक निकटता थी जो समाजों के बीच मौजूद थी। यही वह बिंदु है जहाँ सॉफ्ट पावर इन संबंधों को विशिष्ट बनाती है।

प्राचीन भारत में सॉफ्ट पावर की अवधारणा

भारत की सॉफ्ट पावर की जड़ें अत्यंत गहरी हैं, जिनकी शुरुआत प्राचीन भारत की सभ्यतागत संरचना से मानी जा सकती है। भारतीय दर्शन का केंद्र "अहिंसा", "धर्म", "सत्य", "करुणा", "समभाव" और "वसुधैव कुटुम्बकम्" जैसे सिद्धांतों पर आधारित रहा है। इन सिद्धांतों ने भारत को विश्व–राजनीति में एक नैतिक शक्ति का स्वरूप दिया। भारत ने कभी सैन्य विस्तार से शक्ति प्राप्त नहीं की, बल्कि विचारों, आध्यात्मिकता, विज्ञान, चिकित्सा, गणित और सांस्कृतिक जीवन शैली के माध्यम से दुनिया को प्रभावित किया है। बौद्ध धर्म के माध्यम से भारत की सॉफ्ट पावर एशिया और अन्य क्षेत्रों में फैली। यह प्रसार सिर्फ धार्मिक नहीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक भी था। सम्राट अशोक की "धम्म नीति" ने सॉफ्ट पावर की प्राचीन परंपरा को एक भाषिक और सांस्कृतिक रूप दिया। नालंदा, विक्रमशिला और तक्षशिला जैसे संस्थान न केवल शिक्षा–केंद्र थे, बल्कि वे विश्व के लिए ज्ञान की प्रयोगशालाएँ थे जहाँ चीन, जापान, कोरिया, श्रीलंका और पश्चिमी एशिया से छात्र आते थे। यह भारत का सबसे व्यवस्थित और शक्तिशाली बौद्धिक कूटनीति तंत्र था। आधुनिक युग में गांधी के सत्याग्रह और अहिंसा ने भारत की सॉफ्ट पावर को पुर्नजीवित किया। अमेरिकी नागरिक अधिकार आंदोलन पर गांधी का प्रभाव भारत–अमेरिका सॉफ्ट पावर संबंधों की ऐतिहासिक जड़ों को पुष्ट करता है। महात्मा गांधी की विचारधारा आज भी अमेरिका के शैक्षणिक और सामाजिक विमर्शों का हिस्सा है। यह भारत की अंतर्निहित सॉफ्ट पावर का एक अमिट उदाहरण है।

सैद्धांतिक परिपेक्ष्य

भारत–अमेरिका संबंधों में सॉफ्ट पावर की भूमिका को समझने के लिए अंतरराष्ट्रीय संबंध सिद्धांतों का उपयोग आवश्यक है, क्योंकि यह संबंध बहुआयामी हैं, कहीं यथार्थवाद है, कहीं उदारवाद, और कहीं निर्माणवाद। यथार्थवादी सिद्धांत यह स्पष्ट करता है कि हिंद–प्रशांत क्षेत्र में चीन की बढ़ती शक्ति को संतुलित करने में भारत अमेरिका के

लिए प्रमुख साझेदार है। मल्टी–डोमेन सैन्य अभ्यास, क्वाड की सक्रियता, आपूर्ति–श्रृंखला लचीलापन, और तकनीकी प्रतिबंध इसी ढाँचे में समझे जा सकते हैं परंतु यथार्थवाद यह नहीं बताता कि शुल्क–विवाद, राजनीतिक तनाव और नेतृत्व परिवर्तन के बावजूद संबंध क्यों नहीं टूटे है। उदारवादी सिद्धांत इस स्थिरता को आर्थिक परस्पर–निर्भरता, शिक्षा–सहयोग, अनुसंधान भागीदारी, वैश्विक संस्थानों में सहयोग, और लोकतांत्रिक मूल्यों से जोड़ता है। 2014 के बाद iCET, सेमीकंडक्टर साझेदारी, जलवायु सहयोग, वैक्सीन विकास, डिजिटल पब्लिक गुड्स, और स्वास्थ्य कूटनीति उदारवाद के उदाहरण हैं लेकिन इन सबके पीछे जो शक्ति सबसे महत्वपूर्ण है वह निर्माणवाद है। अलेक्जेंडर वेंड्ट का सिद्धांत बताता है कि राज्य केवल हितों से नहीं, बल्कि अपनी "सामाजिक पहचान" और "साझा मूल्यों" से संचालित होते हैं। भारत और अमेरिका स्वयं को लोकतांत्रिक, नवाचार–उन्मुख, सांस्कृतिक रूप से खुला और मानवतावादी राष्ट्र मानते हैं। यही सांस्कृतिक–राजनीतिक समानता दोनों देशों की सॉफ्ट पावर का मूल है, जो संबंधों को संरचनात्मक स्थिरता प्रदान करती है।

भारत–अमेरिका संबंधों में सॉफ्ट पावर की भूमिका

भारत की सॉफ्ट पावर अमेरिका में भारत की वैश्विक छवि का निर्माण करती है। योग, आयुर्वेद, भारतीय भोजन, भारतीय सिनेमा और साहित्य पहले से ही अमेरिकी समाज में गहराई से स्थापित हैं लेकिन पिछले दो दशकों में भारत की सबसे शक्तिशाली सॉफ्ट पावर उसके ज्ञान–समुदाय, वैज्ञानिक क्षमता, डिजिटल नवाचार, और प्रवासी नेतृत्व बन गए हैं। भारत के वैज्ञानिक, चिकित्सक, इंजीनियर, शोधकर्ता और प्रोफेसर अमेरिकी समाज में असाधारण प्रतिष्ठा रखते हैं। यह प्रतिष्ठा न केवल भारत की छवि को मजबूत करती है, बल्कि अमेरिकी नीति–निर्माण में भारत के लिए समर्थन को भी बढ़ाती है। इसके साथ–साथ भारतीय लोकतंत्र की वैश्विक प्रतिष्ठा और भारत के डिजिटल नवाचार UPI, Aadhaar, CoWIN, ONDC अमेरिका में चर्चा का प्रमुख विषय बने हुए हैं। विशेष रूप से 2023–2025 में AI, क्वांटम अनुसंधान, सेमीकंडक्टर निर्माण, साइबर सुरक्षा, स्वास्थ्य कूटनीति और आपूर्ति–श्रृंखला सहयोग ने संबंधों में नई ऊर्जा दी। शुल्क–विवाद और व्यापार तनाव के बावजूद सभी रणनीतिक क्षेत्रों में सहयोग तीव्र गति से बढ़ा यह सॉफ्ट पावर की स्थिरकारी भूमिका का स्पष्ट प्रमाण है।

2014 के पश्चात् भारत–अमेरिका संबंधों में सॉफ्ट पावर की भूमिका

2014 के बाद भारत–अमेरिका संबंध जिस तीव्रता और बहुस्तरीयता के साथ विकसित हुए हैं, वह इस बात का संकेत है कि द्विपक्षीय संबंध अब केवल सामरिक या आर्थिक सहयोग पर आधारित नहीं रह गए हैं, बल्कि वे समाजों के भीतर गहरे सांस्कृतिक और बौद्धिक संबंधों पर भी निर्भर हो गए हैं। इस कालखंड में भारत ने न केवल अपनी विदेश नीति के क्षितिज का विस्तार किया है, बल्कि उसने स्वयं को वैश्विक दक्षिण की सामूहिक आवाज़ और उदित होते तकनीकी–विकास मॉडल के रूप में भी स्थापित किया है। यह परिवर्तन केवल राजनीतिक इच्छाशक्ति का परिणाम नहीं है, बल्कि इस परिवर्तन को वह सामाजिक समर्थन भी प्राप्त है जिसने दोनों देशों के बीच विश्वास और सहयोग का वातावरण गढ़ा है। भारत ने 2014 के बाद जिस प्रकार वैश्विक मंचों पर अपनी सांस्कृतिक विरासत, लोकतांत्रिक आचरण, आर्थिक संभावनाएँ और तकनीकी उपलब्धियाँ प्रस्तुत की हैं, उससे अमेरिका सहित विश्व समुदाय में भारत की छवि अधिक विश्वसनीय और प्रभावशाली बनी है। भारत का डिजिटल प्रशासन मॉडल, विशेषकर आधार–आधारित प्रमाणीकरण, UPI भुगतान प्रणाली, CoWIN प्लेटफॉर्म, और डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना ने दुनिया को यह दिखाया है कि एक विकासशील देश भी नवाचार के माध्यम से शासन व्यवस्था को पारदर्शी, समावेशी और सक्षम बना सकता है। इन उपलब्धियों ने अमेरिका में भारत की सॉफ्ट पावर को अत्यंत सुदृढ़ किया है, क्योंकि ये उपलब्धियाँ व्यावहारिक, आधुनिक और वैश्विक चुनौतियों के समाधान प्रस्तुत करती हैं। भारत के सॉफ्ट पावर उभार में इसके प्रवासी समुदाय की केंद्रीय भूमिका रही है। 2024 तक अमेरिका में भारतीय मूल के लगभग 50 लाख लोग निवास कर रहे हैं, और वे अधिकांशतः उच्च शिक्षा, विज्ञान, स्वास्थ्य, तकनीकी नवाचार और वित्तीय क्षेत्र में महत्वपूर्ण पदों पर कार्यरत हैं। इस समुदाय की उपलब्धियों ने भारत को उस बौद्धिक प्रतिष्ठा से लैस किया है जो आधुनिक अंतरराष्ट्रीय संबंधों में अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। भारतीय मूल के पेशेवरों की वैज्ञानिक, तकनीकी और उद्यमशील उपलब्धियाँ अमेरिकी समाज में भारत की सकारात्मक छवि को लगातार सुदृढ़ कर रही हैं, और इसी आधार पर

भारत–अमेरिका संबंधों को सामाजिक स्थिरता प्राप्त होती है। इसी अवधि में क्वाड (QUAD) की पुनर्सक्रियता और उसका वैचारिक विस्तार भारत–अमेरिका संबंधों के सॉफ्ट पावर आयाम को और मजबूत करता है। क्वाड अब केवल एक सुरक्षा–उन्मुख मंच नहीं रह गया है, बल्कि वह लोकतांत्रिक शासन, मुक्त समुद्री मार्गों, स्वास्थ्य सहयोग, आपदा प्रबंधन, आपूर्ति–श्रृंखला स्थिरता, तकनीकी मानकों और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के नैतिक उपयोग पर भी केंद्रित है। इन क्षेत्रों में सहयोग इस तथ्य को रेखांकित करता है कि दोनों देश उन साझा मूल्यों के आधार पर एक वैश्विक भविष्य की कल्पना कर रहे हैं जिनमें पारदर्शिता, मानव गरिमा, नवाचार और पारस्परिक सम्मान की प्रमुख भूमिका है। 2014 के बाद भारत–अमेरिका संबंधों में आए विस्तार का एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि दोनों देशों के राजनीतिक नेतृत्व के परिवर्तन का संबंधों पर वैसा प्रभाव नहीं पड़ता जैसा शीतयुद्ध काल में देखा जाता था। इसका मूल कारण यह है कि संबंधों की नींव अब बहुस्तरीय समाज स्तरीय प्रक्रियाओं पर आधारित है, और यह आधार सॉफ्ट पावर के माध्यम से निर्मित हुआ है। सॉफ्ट पावर ने संबंधों को किसी एक पार्टी, नेता या आर्थिक घटना पर निर्भर रहने से मुक्त कर दिया है, और यही इस साझेदारी की प्रमुख शक्ति है।

प्रवासी कूटनीति एवं भारत अमेरिका संबंध

भारतीय प्रवासी समुदाय भारत की सॉफ्ट पावर का सबसे प्रभावशाली चालक है, और यह समुदाय दोनों देशों के बीच न केवल सांस्कृतिक निकटता का निर्माण करता है, बल्कि वह राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक क्षेत्रों में भी गहरा प्रभाव उत्पन्न करता है। भारतीय मूल के लोग अमेरिका में सर्वाधिक शिक्षित और आर्थिक रूप से समृद्ध समुदायों में गिने जाते हैं, और इस उपलब्धि ने भारत के लिए विश्वसनीयता और सम्मान का एक स्थायी आधार तैयार किया है। अमेरिकी विश्वविद्यालयों, वैज्ञानिक प्रयोगशालाओं, स्वास्थ्य संस्थानों, प्रौद्योगिकी कंपनियों और नीति–निर्माण संस्थाओं में भारतीय मूल के लोगों की प्रमुख उपस्थिति भारत की सॉफ्ट पावर का वह आयाम है जिसके प्रभाव को किसी भी सैन्य या आर्थिक शक्ति से तुलना नहीं की जा सकती है। भारत के सॉफ्ट पावर विस्तार का यह वह रूप है जो सामाजिक अनुभव, बौद्धिक क्षमता और कड़ी मेहनत के माध्यम से निर्मित हुआ है, और इसलिए यह अत्यंत स्थायी और प्रभावी है। भारतीय प्रवासी समुदाय का राजनीतिक प्रभाव भी उल्लेखनीय है। भारतीय मूल के कई सांसद, राज्यपाल, नीति–विशेषज्ञ और न्यायिक पदाधिकारी अमेरिकी शासन–व्यवस्था में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। वे न केवल भारतीय मूल की आबादी का प्रतिनिधित्व करते हैं, बल्कि वे भारत–अमेरिका संबंधों के लिए संतुलित और सकारात्मक राजनीतिक वातावरण बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भारतवंशी नेताओं की उपस्थिति अमेरिकी राजनीति में भारत के प्रति अनुकूल दृष्टिकोण को मजबूत करती है, और यह स्थिति किसी भी औपचारिक कूटनीति से कहीं अधिक प्रभावशाली है। सांस्कृतिक स्तर पर भारतीय प्रवासी समुदाय ने अमेरिका में भारतीय कला, संगीत, साहित्य, व्यंजन, योग और भारतीय दर्शन की व्यापक स्वीकृति सुनिश्चित की है। दिवाली का कई राज्यों में आधिकारिक उत्सव के रूप में मान्यता प्राप्त करना, योग दिवस का व्यापक रूप से मनाया जाना, बॉलीवुड फिल्मों और भारतीय संगीत की लोकप्रियताकृये सभी संकेत हैं कि भारत की सांस्कृतिक उपस्थिति अमेरिकी समाज के भीतर गहरे स्तर पर स्थापित हो चुकी है। यह स्थिति इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि सॉफ्ट पावर का सबसे प्रभावी रूप वही होता है जो "प्राकृतिक" लगे, "थोपा हुआ" नहीं। भारत की विदेश नीति भी प्रवासी कूटनीति को एक रणनीतिक साधन के रूप में उपयोग कर रही है। प्रवासी समुदाय को केवल सांस्कृतिक संसाधन या आर्थिक पूँजी के रूप में नहीं देखा जा रहा है, बल्कि उन्हें "लोग–से–लोग संपर्क" (People-to-People Diplomacy) के माध्यम से कूटनीति का सक्रिय भागीदार माना जा रहा है। प्रधानमंत्री मोदी द्वारा अमेरिका में आयोजित बड़े जन–समूह वाले कार्यक्रमों ने प्रवासी समुदाय की भूमिका को वैश्विक जन–राजनय (Public Diplomacy) के केंद्र में स्थापित कर दिया है। इस प्रकार भारतीय डायस्पोरा केवल सांस्कृतिक दूत नहीं है, बल्कि वह भारत की विदेश नीति का विस्तार भी है।

ट्रम्प 2.0 के संदर्भ में सॉफ्ट पावर और राजनीतिक अर्थव्यवस्था

ट्रम्प 2.0 का काल वैश्विक अर्थव्यवस्था और अंतरराष्ट्रीय संबंधों के लिए चुनौतीपूर्ण रहा है, क्योंकि इस अवधि में अमेरिका ने व्यापक संरक्षणवादी नीतियाँ अपनाई हैं और कई देशों पर शुल्क बढ़ोतरी तथा व्यापारिक प्रतिबंध लगाए हैं। भारत भी इन नीतियों से अछूता नहीं रहा है, और 2024–25 के दौरान अमेरिका द्वारा भारत से आयातित दवाइयों,

इस्पात, कांच, प्लास्टिक उत्पादों और तकनीकी उपकरणों पर शुल्क बढ़ाकर व्यापार को प्रभावित किया गया है। यदि भारत–अमेरिका संबंध केवल व्यापारिक हितों पर आधारित होते, तो इस काल में संबंधों में गंभीर तनाव की संभावना थी। परंतु ऐसा नहीं हुआ है, और इसका मुख्य कारण यह है कि संबंधों को स्थिरता प्रदान करने वाली सॉफ्ट पावर अमेरिका में भारत की ऐसी सकारात्मक स्थिति निर्मित करती है जिसे किसी भी राजनीतिक निर्णय से तुरंत नष्ट नहीं किया जा सकता है। अमेरिका की तकनीकी और वैज्ञानिक प्रणाली भारतीय प्रतिभा पर अत्यधिक निर्भर है, और यह निर्भरता भारतीय सॉफ्ट पावर की सबसे ठोस अभिव्यक्ति है। भारतीय तकनीकी विशेषज्ञों, चिकित्सकों, बौद्धिक नेताओं और नीति–विशेषज्ञों की आवश्यकता अमेरिकी संस्थानों में बनी रहती है, और यही कारण है कि वीज़ा प्रतिबंधों या शुल्क विवादों के बावजूद अमेरिकी नीति–निर्माताओं को भारत के साथ सहयोग बनाए रखने की आवश्यकता महसूस होती है। ट्रम्प 2.0 काल के दौरान चीन के साथ अमेरिका की प्रतिस्पर्धा और स्पष्ट हो गई है, और इस प्रतिस्पर्धा ने भारत को एक रणनीतिक संतुलनकारी शक्ति के रूप में महत्त्वपूर्ण बना दिया है। अमेरिका के लिए भारत केवल एक क्षेत्रीय शक्ति नहीं है, बल्कि वह हिंद प्रशांत क्षेत्र में स्थिरता, लोकतांत्रिक शासन और आपूर्ति–श्रृंखला सुरक्षा का प्रमुख स्तंभ है। इस मूल्यांकन ने भारत–अमेरिका संबंधों को संरक्षणवाद की पृष्ठभूमि में भी स्थिर बनाए रखा है। भारतीय प्रवासी समुदाय ने भी इस दौरान अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारतीय मूल के सांसदों, नीति–विशेषज्ञों और उद्योगपतियों ने अमेरिका में यह सुनिश्चित किया है कि भारत–अमेरिका संबंधों को किसी भी अस्थायी आर्थिक तनाव की भेंट न चढ़ने दिया जाए। प्रवासी समुदाय अमेरिकी राजनीति में वह संतुलन प्रदान करता है जो कठिन परिस्थितियों में संबंधों को टूटने नहीं देता है। इस प्रकार ट्रम्प 2.0 काल यह सिद्ध करता है कि सॉफ्ट पावर की भूमिका किसी भी औपचारिक समझौते से कहीं अधिक व्यापक और प्रभावशाली है। सॉफ्ट पावर न केवल सांस्कृतिक प्रभाव का माध्यम है, बल्कि यह राजनीतिक अर्थव्यवस्था को भी स्थिरता प्रदान कर सकती है। यही कारण है कि भारत–अमेरिका संबंध इस काल में भी मजबूती से आगे बढ़े हैं।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य

समकालीन वैश्विक व्यवस्था में भारत–अमेरिका संबंध एक ऐसे मोड़ पर हैं जहाँ सॉफ्ट पावर और रणनीतिक हित एक–दूसरे के पूरक बन गए हैं। दोनों देशों के बीच तकनीकी सहयोग संबंधों का केंद्र बन चुका है, और इस सहयोग की दिशा भविष्य की वैश्विक तकनीकी राजनीति को प्रभावित करने की क्षमता रखती है। iCET, सेमीकंडक्टर सहयोग, कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर साझा अध्ययन, साइबर सुरक्षा ढाँचे, क्वांटम अनुसंधान और उच्च–प्रौद्योगिकी उद्योगों में साझेदारी ने संबंधों को गहरी स्थिरता प्रदान की है। भारत का डिजिटल प्रशासन मॉडल विश्व भर के लिए प्रेरणा का स्रोत बना हुआ है, और अमेरिका भी इस मॉडल के साथ सहयोग बढ़ाने में रुचि रखता है। UPI जैसी भुगतान प्रणाली ने यह सिद्ध किया है कि तकनीकी नवाचार समाज को गहरी संरचनात्मक शक्ति प्रदान कर सकता है, और अमेरिका में इस मॉडल में साझेदारी की संभावनाएँ निरंतर बढ़ रही हैं। इसके साथ–साथ भारत वैश्विक दक्षिण के देशों के लिए एक प्रतिष्ठित आवाज़ बनकर उभरा है, और अमेरिका भी भारत को वैश्विक दक्षिण और विकसित विश्व के बीच सेतु के रूप में देख रहा है। यह वह बिंदु है जहाँ सॉफ्ट पावर और रणनीतिक हित एक साथ मिलते हैं, क्योंकि भारत का सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक प्रभाव उसे वैश्विक नेतृत्व की ओर अग्रसर कर रहा है। हिंद–प्रशांत क्षेत्र में समुद्री सुरक्षा, मुक्त नौवहन और क्षेत्रीय स्थिरता पर दोनों देश एक साझा दृष्टिकोण अपनाए हुए हैं। ऐसे सभी क्षेत्रों में सॉफ्ट पावर वह आधार प्रदान करती है जो विश्वास, पारदर्शिता और दीर्घकालिकता का पोषण करता है।

आलोचनात्मक मूल्यांकन

भारत–अमेरिका संबंधों में सॉफ्ट पावर एक अत्यंत प्रभावशाली कारक है, परंतु इसकी प्रभावशीलता का विवेकपूर्ण विश्लेषण यह संकेत करता है कि सॉफ्ट पावर स्वयं पर्याप्त नहीं है; यह तभी परिणामकारी बनती है जब इसके साथ रणनीतिक, आर्थिक और राजनीतिक कारक संतुलित रूप से जुड़े हों। भारत की सॉफ्ट पावर निश्चित रूप से अमेरिका में उसकी प्रतिष्ठा को बढ़ाती है और द्विपक्षीय संबंधों को सामाजिक आधार प्रदान करती है, किंतु यह भी सत्य है कि अंतरराष्ट्रीय संबंधों में कोई भी शक्ति निरपेक्ष नहीं होती। सॉफ्ट पावर का प्रभाव परिस्थितियों,

नेतृत्व की दिशा, वैश्विक तनावों, आर्थिक हितों और सुरक्षा चुनौतियों पर निर्भर करता है। हालाँकि भारतीय प्रवासी समुदाय अमेरिका में प्रभावशाली है, परंतु उसका प्रभाव एकसमान नहीं है। समुदाय की विविध पृष्ठभूमियाँ, राजनीतिक विचारधाराएँ और सामाजिक प्राथमिकताएँ विभिन्न स्तरों पर भिन्न दृष्टिकोण प्रस्तुत करती हैं। इस विविधता के कारण डायस्पोरा हमेशा एक समन्वित या एकीकृत राजनीतिक संदेश नहीं भेजता है। इसके अलावा, अमेरिका में बढ़ती राजनीतिक ध्रुवीकरण का प्रभाव कुछ क्षेत्रों में प्रवासी आवाज़ को सीमित भी कर सकता है। सॉफ्ट पावर का दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि यह अक्सर सांस्कृतिक प्रतीकों और बौद्धिक छवियों पर आधारित होती है, और इन छवियों की निरंतरता राजनीतिक निर्णयों से प्रभावित हो सकती है। उदाहरण के लिए, अमेरिका में वीज़ा नीतियों में परिवर्तन, H-1B जैसे श्रमिक वीज़ा पर प्रतिबंध, या विश्वविद्यालयों के वित्तीय संकट भारतीय प्रतिभा के प्रवाह को प्रभावित कर सकते हैं। ये स्थितियाँ सॉफ्ट पावर के उस पहलू को चुनौती देती हैं जो अंतरराष्ट्रीय गतिशीलता पर निर्भर है। इसके अतिरिक्त, अमेरिका की सुरक्षा–उन्मुख विदेश नीति कभी–कभी भारत की रणनीतिक स्वायत्तता के साथ तनाव उत्पन्न कर सकती है। उदाहरण के लिए, रूस के साथ भारत के ऐतिहासिक संबंध, ऊर्जा सहयोग या रक्षा–खरीद संबंधों पर अमेरिका के दबाव दोनों देशों के बीच विश्वास को प्रभावित कर सकते हैं। ऐसी परिस्थितियों में सॉफ्ट पावर एक "संतुलन तंत्र" के रूप में कार्य करती है, परंतु वह इन चुनौतियों को पूर्णतः समाप्त नहीं कर सकती है। तकनीकी सहयोग भी कई स्तरों पर चुनौतियों का सामना करता है। अमेरिका अपने तकनीकी बौद्धिक संपदा अधिकारों (IPR), डेटा सुरक्षा और निर्यात नियंत्रण नीतियों के प्रति अत्यंत सतर्क है, और यह सतर्कता कभी–कभी भारत के तकनीकी नवाचार और रक्षा क्षमताओं के साथ पूर्ण रूप से मेल नहीं खाती है। इसी प्रकार, सेमीकंडक्टर निर्माण, AI शासन, क्वांटम अनुसंधान और साइबर सुरक्षा जैसे क्षेत्रों में अमेरिका की प्राथमिकताएँ भारत की तकनीकी स्वायत्तता की आकांक्षाओं से कभी–कभी भिन्न हो सकती हैं। यह भी उल्लेखनीय है कि सॉफ्ट पावर की सफलता अक्सर जनता की धारणा बहुलवाद पर आधारित होती है, और यह धारणा मीडिया कथाओं, राजनीतिक वक्तव्यों और अंतरराष्ट्रीय घटनाओं से प्रभावित होती है। यदि किसी कारणवश किसी घटना या नीति से अमेरिका में भारत की छवि प्रभावित होती है, तो यह सॉफ्ट पावर की प्रभावशीलता को क्षीण कर सकता है। इस प्रकार, सॉफ्ट पावर एक स्थायी शक्ति अवश्य है, परंतु यह पूर्णतः विघटन–अप्रतिरोधी नहीं है। इन सभी चुनौतियों के बावजूद, सॉफ्ट पावर वह मूलभूत शक्ति बनी रहती है जो दोनों देशों के संबंधों के लिए स्थिरता, सह–अस्तित्व और साझा पहचान का आधार निर्मित करती है। यह शक्ति राजनीतिक परिवर्तनों, आर्थिक उतार–चढ़ावों और सामरिक तनावों के बीच संबंधों को टूटने नहीं देती है, और यही इसकी सबसे बड़ी विशेषता है।

भविष्य की दिशा

भारत–अमेरिका संबंधों के भविष्य में सॉफ्ट पावर की भूमिका और अधिक व्यापक होने की संभावना है। विश्व जिस नई तकनीकी–सांस्कृतिक संरचना की ओर अग्रसर है, उसमें भारत की क्षमता और अमेरिका की तकनीकी नेतृत्व भूमिका एक–दूसरे के पूरक के रूप में उभर सकती है। भविष्य का वैश्विक परिदृश्य उन राष्ट्रों के बीच संबंधित संबंधों पर आधारित होगा जो मूल्य–आधारित तकनीक, नैतिक शासन, मानव–केंद्रित विकास मॉडल और सामाजिक न्याय की प्रतिबद्धता साझा करते हैं। भारत और अमेरिका दोनों इस दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। सबसे पहले, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), क्वांटम विज्ञान, जैवदृप्रौद्योगिकी, साइबर सुरक्षा, अंतरिक्ष अनुसंधान और डिजिटल अवसंरचना वे क्षेत्र हैं जहाँ दोनों देशों के बीच सहयोग की विशाल संभावनाएँ हैं। यदि ये सहयोग केवल रणनीतिक साझेदारी पर आधारित होते, तो इनके भीतर सीमाएँ उत्पन्न हो सकती थीं, किंतु सॉफ्ट पावर विशेषकर सांस्कृतिक निकटता, वैज्ञानिक सहयोग, शैक्षणिक आदान–प्रदान और प्रवासी समुदाय का योगदान इन सहयोगों को दीर्घकालिक स्थिरता प्रदान करेगा, दूसरे, वैश्विक दक्षिण में भारत की बढ़ती भूमिका अमेरिका को भारत के साथ एक व्यापक वैश्विक साझेदारी की ओर प्रेरित कर रही है। अमेरिका स्पष्ट रूप से देख रहा है कि अफ्रीका, दक्षिण एशिया, मध्य एशिया और लैटिन अमेरिका में भारत की स्वीकृति और विश्वसनीयता अत्यधिक है, और यह विश्वसनीयता भारत को ऐसे भू–रणनीतिक सहयोगी के रूप में स्थापित करती है जो केवल सैन्य शक्ति पर आधारित नहीं है, बल्कि सभ्यतागत गहराई और सांस्कृतिक सम्मान पर आधारित है। तीसरे, जलवायु परिवर्तन, स्वच्छ ऊर्जा संक्रमण, हरित प्रौद्योगिकी

और सतत् विकास उन क्षेत्रों में हैं जहाँ दोनों देश एक साझा भविष्य का निर्माण कर सकते हैं। भारत की बहुलतावादी विकास दृष्टि और अमेरिका की तकनीकी क्षमता वैश्विक स्तर पर एक संतुलित और न्यायपूर्ण ऊर्जा संक्रमण मॉडल प्रस्तुत कर सकती है। यह क्षेत्र सॉफ्ट पावर के माध्यम से विशेष रूप से मजबूत हो सकता है, क्योंकि पर्यावरणीय नीतियाँ अक्सर नागरिक समाज की भागीदारी और विश्वास पर आधारित होती हैं। चौथा, शिक्षा और शैक्षणिक सहयोग भविष्य में सॉफ्ट पावर के केंद्र में रहेगा। भारतीय छात्रों की संख्या अमेरिका में बढ़ रही है, और यह प्रवृत्ति दोनों देशों के अकादमिक सहयोग को सुदृढ़ करेगी। संयुक्त अनुसंधान केंद्र, प्रौद्योगिकी हब, वैज्ञानिक पुरस्कार और विनिमय कार्यक्रम सॉफ्ट पावर के नए आयाम बनेंगे। पाँचवाँ, रक्षा–कूटनीति और मानवीय सहयोग भी सॉफ्ट पावर के विस्तार के माध्यम बनेंगे। संयुक्त सैन्य अभ्यास, समुद्री डोमेन जागरूकता साझेदारी, आपदा राहत सहयोग और इंडो–पैसिफिक सुरक्षा आर्किटेक्चर ऐसी संरचनाएँ हैं जिनमें सॉफ्ट पावर और हार्ड पावर दोनों का सम्मिलन दिखेगा। भविष्य की सबसे बड़ी चुनौती यह होगी कि दोनों देश वैश्विक तनावों के बीच अपने संबंधों की स्वायत्तता को बनाए रखें। अमेरिका की चीन–नीति, रूस–भारत संबंधों की जटिलता, वीज़ा नीतियों में परिवर्तन, डिजिटल गोपनीयता और डेटा सुरक्षा जैसे मुद्दे भविष्य में संबंधों को प्रभावित कर सकते हैं, किंतु यदि दोनों देशों ने सॉफ्ट पावर के आधार को मजबूत रखा, तो ये चुनौतियाँ संवाद और सहयोग के माध्यम से संतुलित की जा सकती हैं।

निष्कर्ष

भारत–अमेरिका संबंध सॉफ्ट पावर के आधुनिक वैश्विक रूपांतरण का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। इन संबंधों का आधार केवल सैन्य सहयोग, आर्थिक परस्पर निर्भरता या सामरिक संतुलन नहीं है, बल्कि इन संबंधों की वास्तविक आत्मा उन सामाजिक, सांस्कृतिक, बौद्धिक और मानवीय प्रक्रियाओं में निहित है जो दोनों देशों के लोगों को एक–दूसरे के निकट लाती हैं। भारत की सभ्यतागत विरासत, गांधी का नैतिक दर्शन, योग और आयुर्वेद की वैश्विक प्रतिष्ठा, डिजिटल नवाचार, लोकतांत्रिक मूल्यों की निरंतरता और प्रवासी समुदाय की सफलता, ये सभी कारक संयुक्त रूप से भारत की सॉफ्ट पावर का निर्माण करते हैं। अमेरिका में भारतीय समुदाय की उभरती आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक भूमिका ने दोनों देशों के बीच विश्वास, पारस्परिक सम्मान और सहयोग की वह संरचना निर्मित की है जिसे किसी भी अस्थायी राजनीतिक तनाव या व्यापारिक विवाद से चुनौती नहीं दी जा सकती है। सॉफ्ट पावर की यही स्थायित्व क्षमता है जो उसे आधुनिक अंतरराष्ट्रीय संबंधों का सबसे प्रभावशाली उपकरण बनाती है। ट्रम्प 2.0 की संरक्षणवादी नीतियों, वैश्विक आर्थिक व्यवधानों, इंडो–पैसिफिक क्षेत्र के सामरिक तनावों और तकनीकी प्रतिस्पर्धा के बावजूद भारत–अमेरिका संबंधों का स्थिर बने रहना इस बात का प्रमाण है कि सॉफ्ट पावर केवल एक सहायक शक्ति नहीं है, बल्कि वह संबंधों की वास्तविक नींव है। यह नींव दोनों देशों को भविष्य में भी संवाद, सहयोग और साझा मूल्य प्रणाली की दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करेगी। अंततः, भारत–अमेरिका संबंध यह स्पष्ट करते हैं कि इक्कीसवीं सदी की विश्व राजनीति में वही देश टिकाऊ और प्रभावशाली साझेदारियाँ बना पाएँगे जिनके पास सॉफ्ट पावर की गहरी सामाजिक–सांस्कृतिक जड़ें और साझा मानवीय मूल्यों की आधारशिला होगी। भारत और अमेरिका इन दोनों कसौटियों पर खरे उतरते हैं। अतः सॉफ्ट पावर न केवल वर्तमान संबंधों की आधारशिला है, बल्कि यह भविष्य की वैश्विक साझेदारियों का मार्गदर्शक सिद्धांत भी बनेगी।

संदर्भ सूची

1. Aneja, U. (2021) *Cultural diplomacy and India's soft power: Emerging dynamics.* Observer Research Foundation, New Delhi.
2. Bajpai, K., & Pant, H. V. (2020) *India's foreign policy and emerging global order.* Oxford University Press, Oxford, UK.
3. Barnett, M. (2009) *The international humanitarians.* Cornell University Press, New York, USA.
4. Chaudhuri, R. (2022) The India–US partnership: Changing political and strategic contours. *Routledge*, London, UK.

5. Cohen, S. P. (2001) *India: Emerging power.* Brookings Institution Press, DC, USA.
6. Cull, N. J. (2008) *The Cold War and the United States Information Agency: American propaganda and public diplomacy, 1945–1989.* Cambridge University Press, Cambridge, UK.
7. Fair, C. C. (2014) *Fighting to the end: The Pakistan Army's way of war.* Oxford University Press, New York, USA.
8. Ganguly, Š. (2016) *India's foreign policy: Retrospect and prospect.* Oxford University Press, New York, USA.
9. Hall, I. (2018) *Modi and the reinvention of Indian foreign policy.* Bristol University Press, Bristol, UK.
10. Ignatieff, M. (2000) *The needs of strangers: An essay on privacy, solidarity, and the politics of being human.* Picador, New York, USA.
11. Kapur, D. (2010) *Diaspora, development, and democracy: The domestic impact of international migration from India.* Princeton University Press, NJ, USA
12. Khurana, G. (2020) India in the Indo-Pacific: New Delhi's theater of opportunity. *Routledge,* London, UK.
13. Malone, D. M. (2011) *Does the elephant dance? Contemporary Indian foreign policy.* Oxford University Press, Oxford, UK.
14. Mishra, P. (2017) *Age of anger: A history of the present.* Penguin, London, UK.
15. Mohan, C. R. (2006) *Impossible allies: Nuclear India, United States, and the global order.* Brookings Institution Press, DC, USA.
16. Nye, J. S. (2004) *Soft power: The means to success in world politics.* Public Affairs, New York, USA.
17. Pant, H. V. (2009) *Contemporary debates in Indian foreign and security policy.* Palgrave Macmillan, New York, USA.
18. Pant, H. V. (2016) The US pivot and Indian foreign policy: Asia's evolving security architecture. *Routledge,* London, UK.
19. Panda, J. (2021) *India and the Indo-Pacific: New strategies and partnerships.* Institute for Defence Studies and Analyses, New Delhi.
20. Rana, K. S. (2011) *21st century diplomacy: A practitioner's guide.* Continuum, London, UK.
21. Saran, S. (2017) *How India sees the world: Kautilya to the 21st century.* Juggernaut, New Delhi.
22. Singh, M. (2014) The India–US civil nuclear agreement: Origins and implications. *Routledge,* London, UK.
23. Tellis, A. J. (2022) *Striking asymmetries: Nuclear negotiations with India and Pakistan.* Carnegie Endowment for International Peace, Washington, DC, USA.
24. Wendt, A. (1999) *Social theory of international politics.* Cambridge University Press, Cambridge, UK.
25. Zakaria, F. (2008) *The post-American world.* W. W. Norton & Company, New York, USA.

——==00==——